PCSMANTRA.COM

गांधी-अंबेडकर संवाद: असहमति से आज के लिए क्या सीखें?

समाचार-संदर्भ: 2026-11-17 | **प्रकाशन:** 17 नवंबर 2026
मुख्य परीक्षा: GS-I: समाज; GS-II: सामाजिक न्याय



मौलिक प्रतीकात्मक चित्र: pcsmantra.com

यह भी पढ़ें: महिलाओं की श्रम-भागीदारी: अवैतनिक देखभाल कार्य की दीवार और डेटा की तलाश

खबरों में क्यों

17 नवंबर 2026 के लेख में योगेंद्र यादव ने गांधी-अंबेडकर बहस की आज की व्याख्या पर लिखा है। उनका तर्क है कि दोनों विचारकों को स्थायी विरोधी खेमों के प्रतीक बनाने के बजाय उनके विचारों के बीच संवाद संभव है। लेख का शीर्षक ऐतिहासिक मित्रता का नया दावा नहीं है; यह वर्तमान राजनीति और सार्वजनिक विचार के लिए एक रूपक है।

लेख का तर्क

यादव जाति, सामाजिक सुधार और राजनीतिक कार्रवाई पर मतभेद मिटाने की बात नहीं करते। वे पूछते हैं कि बाद की पीढ़ियां उन मतभेदों को कैसे पढ़ें। किसी विचारक को निर्विवाद प्रतिमा बनाना और दूसरे को पूरी तरह खारिज करना, दोनों तरीके विचारों की गंभीर जांच को कमजोर कर सकते हैं। लेखक का प्रस्ताव है कि आलोचनात्मक संवाद बनाए रखते हुए बराबरी, गरिमा और अन्याय-विरोधी कार्रवाई के लिए संसाधन खोजे जाएं।

मुख्य परीक्षा में उपयोग

एक संतुलित उत्तर में सहमति और असहमति अलग रखें। नैतिक अपील और सामाजिक परिवर्तन का संबंध एक प्रश्न है; अधिकार, प्रतिनिधित्व और संस्थागत सुरक्षा का संबंध दूसरा। इन्हें एक-दूसरे के विकल्प की तरह रखने के बजाय पूछा जा सकता है कि न्यायपूर्ण समाज के लिए नैतिक बदलाव और जवाबदेह संस्थाएं कैसे साथ काम करें।

संवाद का अर्थ ऐतिहासिक मतभेद नकारना नहीं है। इसी तरह आलोचना का अर्थ दूसरे विचारक के पूरे योगदान को अमान्य मानना नहीं है। उत्तर में किसी लेखक की आज की व्याख्या को स्वयं गांधी या अंबेडकर का प्रमाणित कथन न बनाएं। मूल भाषण, पुस्तक या दस्तावेज के बिना कोई नया उद्धरण न जोड़ें।

क्या नहीं कहना चाहिए

यह नहीं कि दोनों सभी विषयों पर सहमत थे। यह भी नहीं कि आज की राजनीतिक व्याख्या से इतिहास का विवाद समाप्त हो गया। यह मसौदा किसी खास समझौते की तारीख, किसी पुस्तक का प्रकाशन-वर्ष या किसी विचारक के मत-परिवर्तन की पूरी समयरेखा नहीं देता; उन विवरणों के लिए अलग प्राथमिक जांच आवश्यक है। समाचार लेख में आए सभी ऐतिहासिक विवरण यहां नहीं दोहराए गए हैं।

मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

सार्वजनिक विचार में नैतिक परिवर्तन और अधिकार-आधारित संस्थागत सुरक्षा को साथ पढ़ना क्यों जरूरी है? गांधी-अंबेडकर बहस के समकालीन पाठ के संदर्भ में चर्चा करें। (150 शब्द) (10 अंक)

उत्तर की रूपरेखा

भूमिका में: असहमति को लोकतांत्रिक विचार की प्रक्रिया के रूप में रखें।

मुख्य भाग में: नैतिक बदलाव, समान गरिमा, प्रतिनिधित्व और संस्थागत सुरक्षा के संबंध पर चर्चा करें। समकालीन लेखक की व्याख्या को ऐतिहासिक उद्धरण न बनाएं।

निष्कर्ष में: मतभेद स्वीकारते हुए आलोचनात्मक संवाद और जवाबदेह संस्थाओं का समर्थन करें।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQ)

क्या लेख दोनों की ऐतिहासिक मित्रता सिद्ध करता है?

नहीं। शीर्षक वर्तमान वैचारिक संवाद का रूपक है।

क्या संवाद का अर्थ मतभेद मिटाना है?

नहीं। लेखक संवाद की संभावना रखते हुए गहरे मतभेद स्वीकारते हैं।

उत्तर में कौन-सी सावधानी रखें?

समकालीन टिप्पणी, मूल विचारक के शब्द और अपना विश्लेषण अलग रखें।

स्रोत

- indianexpress.com

PCSMANTRA.COM